मैं देव श्री अरहंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों।।
अरहन्त भाषित बैन पूजूँ, द्वादशांग रची गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरण, शिवहेत सब आशा हनी।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजि भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम, चैत्य-चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु-नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूँ।।
कैलाश श्री सम्मेदगिरि, गिरनार मैं पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि, और तीरथ शर्मदा।।
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जय, होय पति शिव गेह के।।

*(दोहा)*

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहु विधि भक्ति बढ़ाय।।

ॐ ह्रीं भावपूजां, भाव वंदनां, त्रिकालपूजां, त्रिकाल वंदनां भाव पुरस्सार करोमि, कारयामि, अनुमोदनां करोमि। श्री अरहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंचपरमेष्ठीभ्यो नमः। जल-स्थल-नभ-गुहा-नगर-नगरी-उर्ध्व-मध्य-अधोलोक-स्थितविद्यमान कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विद्यमान वीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंच भरत पंच ऐरावत क्षेत्र संबंधी त्रिंशत् चतुर्विंशति (तीस चोवीस) जिनेभ्यो नमः। नन्दीश्वर-द्वीप-संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु संबंधी अशीति जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलासगिरी चंपापुर पावापुर गडगिरनार मुक्तागिरी आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबिद्रि मूलबिद्री श्री अंतरीक्ष पार्श्वनाथ शिरपूर आदि तीर्थ क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमऋषिभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धचादी षोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः।

इति एतेभ्यो सर्वेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## शान्तिपाठ-२

हूँ शान्तिमय ध्रुव ज्ञानमय, ऐसी प्रतीति जब जगे।
अनुभूति हो आनन्दमय, सारी विकलता तब भगे।।१।।
निजभाव ही है एक आश्रय, शान्ति दाता सुखमयी।
भूल स्व दर-दर भटकते, शान्ति कब किसने लही।।२।।
निज घर बिना विश्राम नाहीं, आज यह निश्चय हुआ।
मोह की चट्टान टूटी, शान्ति निर्झर बह रहा।।३।।
यह शान्तिधारा हो अखण्डित, चिरकाल तक बहती रहे।
होवें निमग्न सुभव्यजन, सुखशान्ति सब पाते रहें।।४।।
पूजोपरान्त प्रभो यही, इक भावना है हो रही।
लीन निज में ही रहूँ, प्रभु और कुछ वाँछा नहीं।।५।।

सहज परम आनन्दमय निज ज्ञायक अविकार।
स्व में लीन परिणति विषैं, बहती समरस धार।।

## विसर्जन पाठ-२

थी धन्य घड़ी जब निज ज्ञायक की, महिमा मैंने पहिचानी।
हे वीतराग सर्वज्ञ महा-उपकारी, तव पूजन ठानी।।१।।
सुख हेतु जगत में भ्रमता था, अन्तर में सुख सागर पाया।
प्रभु निजानन्द में लीन देख, मोय यही भाव अब उमगाया।।२।।
पूजा का भाव विसर्जन कर, तुमसम ही निज में थिर होऊँ।
उपयोग नहीं बाहर जावे, भव क्लेश बीज अब नहिं बोऊँ।।३।।
पूजा का किया विसर्जन प्रभु, और पाप भाव में पहुँच गया।
अब तक की मूरखता भारी, तज नीम हलाहल हाय पिया।।४।।
ये तो भारी कमजोरी है, उपयोग नहीं टिक पाता है।
तत्त्वादिक चिन्तन भक्ति से भी दूर पाप में जाता है।।५।।
हे बल-अनन्त के धनी विभो ! भावों में तबतक बस जाना।
निज से बाहर भटकी परिणति, निज ज्ञायक में ही पहुँचाना।।६।।
पावन पुरुषार्थ प्रकट होवे, बस निजानन्द में मग्न रहूँ।
तुम आवागमन विमुक्त हुए, मैं पास आपके जा तिष्ठूँ।।७।।

मंगलं भगवान् वीरो मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुन्दकुन्दार्यो, जैन धर्मोऽस्तु मंगलम्।।४।।
सर्व-मंगल-मांगल्यं सर्वकल्याणकारकं।
प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयतु शासनम्।।५।।